

Padma Shri



SHRI DADUDAN GADHAVI (KAVI “DAAD”) (POSTHUMOUS)

Shri Dadudan Gadhavi, popularly known as "KAVI DAAD" was a renowned Gujarati poet and folk singer. He has contributed in Gujarati Poetry by presenting 10 Poetry compilations as a writer. His creations have touched versatile emotions of the people. His poetries have secured a place in national and international seminars on Gujarati Folklore.

2. Born on 11th September, 1940, at village Ishwariya, Tehsil Valraval of Gir-Somnath District, Shri Gadhavi inherited the skill and grammar of Gujarati-Charani Folklore from the traditions of forefathers like Mahatma Ishardasji from maternal side and Suryamallji Misan from paternal side. His debut Publication "Tevvan" (fingertips) earned such an appreciation and popularity that two generations of Folk singers have sung his poetries and earned name and fame. The most popular one is "Kaaljakerokatakamaro, gnaththichhutigyo" (a poetry depicting feelings of a father parting from his daughter upon marriage, broadly meaning "I lost today the piece of my heart"). Inspired by this poetry, Hon. Shri Keshubhai Patel, the then chief Minister of Gujarat initiated the "Kunavarbai nu mameru" a scheme of financial assistance in social security sector. His another poetry on patriotism "Ghadvaiya mare thakorjinathithavu" (a stone says to the artisan, "don't create an idol of Lord out of me as I would like to be a stone of battle ground where the dear son of mother India have lost their lives") has enlightened patriotism in the hearts of readers.

3. Shri Gadhavi was also known for his performance in "Lok Dayaras" a forum for presenting performing Folks arts, as a singer and a recitation master of his own poetries with narrations. He was also popular for his poetries on nature, describing the river "Hiran" in his poetry "Nadirupalinakharali" and gratifying Mount Girnar in his poetry "Adikhamaajubho Girnar". He has written a few songs in Hindi also. A bhajan playing Lord Shiva "Kailas kenivasinamu bar barhu, aayosharantihare, prabhu tar tartu" has won international fame.

4. Shri Gadhavi, by virtue of his poetry contributed a lot towards the nationalism through his creations like, "Bang Bovani" and patriotic poetries in his collection "Tevvan". He has focussed on women empowerment by gratifying woman character like Urmila in "Laxmanaya" and other compilations. He wrote poems on prohibition of liquor in Government periodical "Kalyan Yatra". He has contributed a lot in collection of manuscripts of Charani-Sahitya which are archived in the Saurashthra University. He has also worked as an approved member of "Audition Committee" of All India Radio, Rajkot. He was a top class singer on the panel of All India Radio and has presented and illustrated many disappearing forms of folklore like "Maniyaro" and "Katha Geet" etc.

5. Shri Gadhavi was awarded the highest "Lok Kala Purskar" in the year 1998. He won the Best Lyricist Award for year 1986 in Gujarat Films, given by the Government of Gujarat and "Shri Dula Bhaya Kaag" Award, a prestigious award in the field of Gujarat Lok Sahitya. He also received a Certificate of Honour at the hands of then Chief Minister of Gujarat Shri Narendra Modi, at state level celebration of Gujarat Day 1st May, 2004

6. Shri Gadhavi passed away on 26th April, 2021.



श्री दादुदान गढवी (कवि "दाद") (मरणोपरान्त)

"कवि दाद" के नाम से लोकप्रिय श्री दादुदान गढवी एक प्रख्यात गुजराती कवि और लोक गायक थे। उन्होंने लेखक के रूप में गुजराती काव्य में 10 काव्य संग्रहों का योगदान दिया है। उनकी रचनाओं ने लोगों की अलग-अलग भावनाओं को स्पर्श किया है। गुजराती लोक साहित्य पर आयोजित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में उनके काव्य को प्रमुख स्थान दिया गया है।

2. श्री गढवी का जन्म 11 सितंबर, 1940 को गिर-सोमनाथ जिले के वलरावल तहसील के ईश्वरिया गांव में हुआ था। उन्होंने माता के परिवार की ओर से महात्मा ईसरदासजी और पिता के परिवार की ओर से सूर्यमलजी मिसान जैसे अपने पूर्वजों से गुजराती-चारणी लोक साहित्य का कौशल और व्याकरण सीखी। उनकी पहली प्रकाशित रचना "टेवां" (उंगली) को इतनी प्रशंसा और लोकप्रियता प्राप्त हुई कि लोक गायकों की दो पीढ़ियों ने उनकी कविताएं गाई हैं तथा उन्होंने नाम और शौहरत हासिल की है। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है, "कालजा केरोकाटकोमारो, गांठीथी छूटीग्यो" (बेटी के विदा होने पर पिता की भावना व्यक्त करने वाली एक कविता) जिसका अर्थ है, "आज मेरे हृदय का एक टुकड़ा खो गया"। उनकी कविता से प्रेरित होकर गुजरात के तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री श्री केशुभाई पटेल ने सामाजिक सुरक्षा क्षेत्र में वित्तीय सहायता की एक योजना "कुंवरबाई नू मामेरू" शुरू की थी। देश भक्ति पर उनकी एक अन्य कविता "घड़वैया मारे ठाकोरजी नाथी थावू" (एक पत्थर कारीगर से कहता है, "मुझमें से किसी भगवान की मूर्ति न बनाओ क्योंकि मैं रणभूमि का एक पत्थर बनना चाहता हूँ, जहां भारत माता के सपूत ने बलिदान दिया है") पाठकों का हृदय देशभक्ति से भर देती है।

3. श्री गढवी को उनकी अपनी कविताओं और कथानकों के गायक और प्रवीण वाचक के रूप में लोककला प्रदर्शन मंच "लोक दायरास" में प्रस्तुतियां देने के लिए भी जाना जाता था। वे प्रकृति का वर्णन करने वाली अपनी कविताओं के लिए भी लोकप्रिय थे, जिसमें उन्होंने अपनी कविता "नदीरूपालीनखराली" में "हिरण" नदी और "आदीखमाजभो गिरनार" में गिरनार पर्वत का सुन्दर चित्रण किया है। उन्होंने हिंदी में भी कुछ गीत लिखे हैं। उनके द्वारा रचित भगवान शिव का भजन "कैलाश के निवासी नामू बर बरहू, आयो शरण तिहारे, प्रभू तार तार तू" को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है।

4. श्री गढवी ने अपनी कविताओं के माध्यम से अपनी रचनाओं यथा "बंग बोवानी" और "टेवां" काव्य संग्रह में अपनी देशभक्ति कविताओं द्वारा राष्ट्रवाद की भावना पैदा की है। उन्होंने "लक्ष्मण्या" और अन्य काव्य संग्रहों में उर्मिला जैसी महिला पात्र को महत्व देकर नारी सशक्तीकरण पर भी जोर दिया है। उन्होंने सरकारी पत्रिका "कल्याण यात्रा" में शराबबंदी पर कविताएं लिखी हैं। उन्होंने चारणी साहित्य की पांडुलिपियों के संग्रहण में बहुत योगदान दिया है, जिन्हें सौराष्ट्र विश्वविद्यालय में रखा गया है। उन्होंने आकाशवाणी, राजकोट की "ऑडिशन समिति" के अनुमोदित सदस्य के रूप में भी कार्य किया था। वे आकाशवाणी के पैनल में उच्च श्रेणी के गायक थे और उन्होंने "मनियारो" और "कथा गीत" आदि जैसे लोक साहित्य के विलुप्त होते जा रहे कई रूपों की प्रस्तुति और चित्रण किया है।

5. श्री गढवी को वर्ष 1998 में सर्वोच्च "लोककला पुरस्कार" प्रदान किया गया। गुजरात सरकार द्वारा उन्हें वर्ष 1986 में गुजराती फिल्मों के सर्वश्रेष्ठ गीतकार का पुरस्कार दिया गया तथा गुजराती लोक साहित्य के क्षेत्र का प्रतिष्ठित "श्री दुला भाया काग" पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्हें 01 मई, 2004 को गुजरात दिवस के राज्य स्तरीय समारोह में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सम्मान प्रमाणपत्र दिया गया।

6. श्री गढवी का 26 अप्रैल, 2021 को देहावसान हो गया।